Issue-15; Vol.01, Sept. 2024
ISSN–2231-1130
VEETHIKA

34.0 पं० दीनदयाल उपाध्यायः एक शैक्षिक व्यक्तित्व

- **कमलेश सिंह,** असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी।
  E-mail- mphilkamalesh.jhansi@gmail.com
- **डॉ० बाबूलाल तिवारी,** पूर्व प्राचार्य, बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी।

शोध-सार

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितंबर 1916 राजस्थान प्रान्त के जयपुर-अजमेर रेलवे लाइन पर स्थित धनकिया नामक रेलवे स्टेशन में हुआ था। पंडित जी जब 2 वर्ष 6 माह के थे तभी उनके पिता भगवती प्रसाद का स्वर्गवास हो गया। 6 वर्ष के होते-होते माँ श्रीमती रामप्यारी क्षयरोग से ग्रस्त होकर भगवान को प्यारी हो गयी। अल्पायु में ही पंडित जी से माँ का साया जाता रहा। पंडित जी की औपचारिक शिक्षा-दीक्षा अपने मामा राधारमण जी शुक्ल के साथ गंगापुर सिटी में हुई। वह बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक व्यक्तित्व की स्पष्ट झलक उनके द्वारा रचित विभिन्न ग्रन्थों व उनके कृतित्व से मिलती है। समाज के लिए शिक्षा की महत्ता कितनी है, उनके द्वारा स्थापित "जीरो क्लब" से लगाई जा सकती है। जीरो क्लब का उददेश्य परीक्षा में शून्य अंक लाने व कमजोर व पिछडें छात्रों की सहायता कर उन्हें बराबरी के स्तर पर लाना था। पंडित जी शिक्षा को समाज के विकास का सर्वोत्तम साधन मानते थे, उनका मानना था शिक्षा ही किसी भी राष्ट्र के निर्माण की चाबी है। किसी भी राष्ट्र का निर्माण उसके नागरिकों पर निर्भर करता है और वे सभी नागरिक मिलकर समाज का निर्माण करते है।

पंडित जी का मानना था सभ्य समाज का निर्माण परिष्कृत शिक्षा प्रणाली द्वारा ही किया जा सकता है सामाजिक शिक्षा, अन्त्योदय, एकात्म मानव आदि प्रत्ययों का सृजन उनके शैक्षिक व्यक्तित्व की झलक मानस पटल पर गहरे से छाप छोड़ती है। पंडित जी औपचारिक शिक्षा (शालेय शिक्षा) के साथ-साथ अनौपचारिक (समाज के द्वारा) शिक्षा को भी उतना ही महत्वपूर्ण मानते थे क्योंकि सामाजिक शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति में संस्कारों व मूल्यों का बीजारोपण आसानी से किया जा सकता है। पंडित जी मजहबी आधार पर शिक्षा के स्वरूप के निर्माण के विरोधी थे विशेषतः ईसाई मिशनरियों द्वारा चलाई जाने वाली संस्थाओं को देश के लिए उन्होंने खतरनाक बताया। पंडित जी शिक्षा को देश की उन्नति का सर्वोत्तम उपकरण मानते थे, इसलिए वह शिक्षा को औपचारिक व अनौपचारिक दोनो माध्यमों से देने के पक्षधर थे। सामाजिक व व्यक्तिगत शिक्षा संस्कृति व मूल्यगत नैतिक शिक्षा, नवनिर्माण की शिक्षा, भौतिकवाद का अध्यात्मिकता से जुड़ाव की शिक्षा से युक्त समाज के निर्माण के स्वप्नदृष्टा से थे पंडित जी। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी विज्ञान और संस्कृति के समन्वित स्वरूप को ही समाज के पुनर्निर्माण का आवश्यक तत्व मानते है और आगाह करते है "हम सम्पूर्ण मानव के ज्ञान और उपलब्धियों का संकलित विचार करें।" पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के व्यक्तित्व व कृतित्व से समझा जा सकता है कि वह भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यक्तिगत व सामाजिक शिक्षा, भौतिक व आध्यात्मिक शिक्षा, भौतिक व वैज्ञानिक शिक्षा एवं आडम्बर विहीन शिक्षा के समन्वित दृष्टिकोण के पोषक थे।

मुख्य शब्द *– जीरो क्लब, शालेय शिक्षा, एकात्म मानववाद, समन्वित दृष्टिकोण*

प्रस्तावना

स्वामी विवेकानन्द और महर्षि अरविन्द की गौरवशाली भारतीय परम्परा को आगे बढाने वाले प्रखर राष्ट्रभक्ति की अलख जगाने वाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी, एकात्म मानववाद के प्रणेता महामानव पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्म 25 सितम्बर 1916 विक्रम संवत् 1973 शालिवाहन शक 1938 भाद्रपद आश्विन कृष्ण 13 सोमवार को राजस्थान राज्य के जयपुर अजमेर रेलवे लाईन पर स्थित धनकिया नामक रेलवे स्टेशन में हुआ था। पं० दीनदयाल के नाना पं० चुन्नीलाल जी शुक्ल धनकिया में स्टेशन मास्टर थे। अतः इनके जन्म के समय इनकी माता जी अपने पिता के पास धनकिया में ही रह रही थी। पंडित दीनदयाल जी के पूर्वज मथुरा जिले के आगरा मथुरा मार्ग पर स्थित फरह कस्बे से एक किलोमीटर पश्चिम में नगला चन्द्रभान नामक गांव में रहते थे जहां दुर्भाग्य

से पंडित जी कभी नहीं रह सकें। पंडित जी के पिता जी का नाम भगवती प्रसाद उपाध्याय व माता श्रीमती रामप्यारी थी। पंडित जी के बचपन का नाम दीना था। पंडित जी के जन्म के ढाई वर्ष बाद ही इनके पिता भगवती प्रसाद जी का निधन हो गया। पंडित जी व इनका छोटा भाई शिवदयाल (शीबू) दोनों भाई माँ के साथ नाना के पास रहने लगे। पंडित जी जब तक 6 वर्ष के हुये कि एक और विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा पंडित जी की मां श्रीमती रामप्यारी भी क्षय रोग से ग्रस्त होकर भगवान को प्यारी हो गयी। अल्पायु में ही पंडित जी से पिता व मां की छत्रछाया जाती रहीं। "दीना" वास्तव में "दीना" (अनाथ) मात्र रह गया।

पंडित दीनदयाल जी के नाना पं० चुन्नीलाल जी शुक्ल नौकरी छोडकर "दीना" और "शीबू" के साथ अपने गांव गुड़ की मड़ई आगरा चले आए। गुड़ की मड़ई आगरा जिले में फतेहपुर सीकरी के पास स्थित छोटा सा गांव था। यही गांव पं० दीनदयाल जी का वास्तविक ननिहाल था। पंडित जी की उम्र अभी 9 वर्ष थी कि उनके पालक नाना श्री चुन्नीलाल जी शुक्ल सितम्बर 1925 में स्वर्ग सिधार गये। पिता, माता व नाना के वात्सल्य से वंचित होकर वे अपने मामा श्री राधारमण शुक्ल के आश्रय में पलने लगे। श्री राधारमण शुक्ल गंगापुर सिटी में सहायक स्टेशन मास्टर थे।

पंडित दीनदयाल जी सन् 1925 में अपने मामा श्री राधारमण जी शुक्ल के साथ गंगापुर सिटी चले गये, यहीं उनकी विधिवत शिक्षा का शुभारम्भ हुआ। पंडित जी बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। पं० दीनदयाल जी अपने अध्ययन काल में इतने प्रतिभासम्पन्न थे कि जब वे कक्षा नौ में पढ़ते थे तो कक्षा दस के छात्र भी उनसे गणित के सवाल हल करवाने आते थे। अभी तक पंडित दीनदयाल जी ने अपने पालकों की मृत्यु का दुःख सहन किया था लेकिन 18 नवम्बर सन् 1934 को उनके पालित छोटे भाई शीबू के देहान्त ने उन्हें अन्दर से झकझोर दिया। जब दीनदयाल जी कक्षा नौ में पढ़ रहे थे वे अट्ठारह वर्ष के थे कि छोटे भाई शिवदयाल मोतीझर (टाइफाइड) से पीड़ित हो गया। लाख कोशिशों के बावजूद दीनदयाल जी शीबू को नहीं बचा पाए। दीनदयाल जी शीबू की मृत्यु से अत्यन्त विचलित हो उठे, जिनकी याद जीवन में कभी नहीं भुला पाए।

सन् 1934 में श्री नारायण शुक्ल (मामा) का स्थानान्तरण "सीकर" हो जाने के कारण दीनदयाल जी उनके साथ सीकर आ गये और महाराजा कल्याण सिंह हाईस्कूल में प्रवेश ले लिया। उन्नीस वर्ष की आयु में सन् 1935 में पंडित जी अजमेर बोर्ड से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। दीनदयाल जी की प्रतिभा से प्रभावित होकर सीकर महाराज कल्याण सिंह ने इन्हें स्वर्ण पदक से सम्मानित किया और अग्रिम शिक्षा के लिए 10 रूपये की मासिक छात्रवृत्ति तथा 250 रूपये की एक मुश्त आर्थिक सहायता प्रदान की। दूसरा स्वर्ण पदक अजमेर बोर्ड द्वारा उन्हें प्रदान किया गया।

इण्टमीडिएट की पढ़ाई के लिए सन् 1935 में पिलानी राजस्थान गए। अतः विडला इण्टर कॉलेज में प्रवेश ले लिया। 1937 में इण्टरमीडिएट बोर्ड की परीक्षा में बैठे और समस्त बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त किया व सभी विषयों में विशेष योग्यता के अंक प्राप्त किये। विडला कॉलेज के पंडित दीनदयाल जी प्रथम छात्र थे जिसने इतने सम्मानजनक अंकों से परीक्षा पास की थी। पंडित जी की मेधावी प्रतिभा का सम्मान करते हुए सीकर महराज के समान ही श्री धनश्याम दास विडला ने एक स्वर्ण पदक 10 रूपये मासिक छात्रवृत्ति तथा पुस्तकों के लिए 250 रूपये प्रदान किये।

इण्टरमीडिएट उत्तीर्ण करने के बाद उच्च्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए पंडित जी ने कानपुर की ओर पदार्पण किया और एस०डी० (सनातन धर्म) कॉलेज नबाबगंज कानपुर में बी०ए० में प्रवेश ले लिया। पंडित जी की कुशाग्र बुद्धि व मेधा की पहचान करते हुये सन् 1937 में ही वेदमूर्ति पंडित सातवलेकर जी ने कानपुर में संघ की शाखा में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के बारे में भविष्यवाणी की-"किसी दिन बड़ा होकर यह कुशाग्र बुद्धि बालक देश का गौरव बनेगा।"

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक व्यक्तित्व की स्पष्ट झलक उनके द्वारा रचित विभिन्न ग्रन्थों व उनके कृतित्व से मिलती है। दीनदयाल जी अक्षरशः अनिकेत थे। 25 वर्ष की अवस्था तक पंडित जी राजस्थान व उत्तर प्रदेश में कम से कम ग्यारह स्थानों में

कुछ-कुछ समय रहे, हर जगह की सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक परिस्थितिओं की छाप उनके मानस पटल पर गहरे से समाहित हो गई थी। इसके बाद ही उनका प्रवेश सार्वजनिक जीवन में हो गया और वे अखण्ड प्रवासी हो गये। मृत्यु ने निरन्तर उनके शिशु, बाल, किशोर व युवामन पर आघात किये। अतः उनके मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया था, इसलिए विवाह करके पारिवारिक जीवन व्यतीत करने की कल्पना भी उनके मन में कभी नहीं आयी। नए-नए स्थानों पर प्रवास करना नए नए अपरिचित लोगों से मिलना-जुलना उनमें पारिवारिकता उत्पन्न करना उन्होनें बचपन की अनिकेत अवस्था से ही सीख लिया था। सम्पूर्ण राष्ट्र ही उनका घर परिवार था। "वसुधैव कुटुम्बकम" की भावना से ओत-प्रोत पंडित जी सारे राष्ट्र व विश्व को अपना परिवार मानते थे, मानते ही नहीं थे बल्कि ये भावना उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में भली-भांति समाहित थी जिसके दर्शन उनके व्यवहार में भी दृष्टिगोचर होते है।

एकात्म मानववाद के प्रणेता पंडित जी का परिवार समस्त जगत के प्राणिमात्र थे। अपनी सम्पूर्ण शिक्षा-दीक्षा के उपरान्त उन्होनें अपना जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया। सन् 1942 में राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ के लखीमपुर जिले के प्रचारक नियुक्त होकर राष्ट्र कार्य के लिए कटिबद्ध हो गए। निरन्तर प्रवास और संगठन कार्य का सतत् मार्गदर्शन देश के कोने-कोने में लाखों स्वयं सेवकों से मधुर स्नेह पूर्ण आत्मीय सम्बन्धों की स्थापना यही पंडित जी का एकमेव कार्य था।

पंडित दीनदयाल जी देश की एकता और अखण्डता के प्रति सदैव सजग व समर्पित रहे। अपने जीवन के हर क्षण को समाज सेवा में लगाया। सार्वजनिक जीवन में कार्य करते हुए पंडित जी को यह अनुभव हो गया था कि राष्ट्र की निर्धनता और अशिक्षा को दूर किये बिना वास्तविक उन्नति नहीं हो सकती। अतः निर्धन एवं अशिक्षित व्यक्तियों के विकास के लिए अन्त्योदय जैसे कल्याणकारी कार्यक्रमों का सुझाव प्रस्तुत किया जो उनके समाज के आर्थिक विकास के लिए आर्थिक चिन्तन पर आधारित है और आज भी प्रासंगिक तथा भारतीय परिवेश के अनुकूल है। उनके सामाजिक और आर्थिक चिन्तन की व्याख्या है कि आर्थिक योजनाओं और आर्थिक विकास व प्रगति की माप सामाजिक सोपान क्रम में अन्तिम पायदान अर्थात् निचले स्तर पर स्थित व्यक्ति से हो, न कि ऊपर के सोपान पर बैठे व्यक्ति से। आज हमारे देश व समाज में ऐसे करोड़ों-करोड़ मानव है, जो मानव के किसी भी अधिकार का उपयोग नहीं कर पाते।

शासन के नियम व्यवस्थाये योजनाएं और नीतियाँ प्रशासन का व्यवहार एवं भावना इनको अपनी परिधि में लेकर नहीं चलती, अपितु उन्हें मार्ग का रोड़ा ही समझा जाता है। हमारी भावना और सिद्धान्त है कि यह मैले कुचैले अनपढ़ सीधे-साधे लोग हमारे नारायण है। हमें इनकी पूजा करनी है यह हमारा सामाजिक एवं मानव धर्म है। जिस दिन इनको पक्के सुन्दर घर बनाकर देगें, जिस दिन हम इनके बच्चों और स्त्रियों को शिक्षा और जीवन दर्शन का ज्ञान देगें जिस दिन हम इनके पैर की विवाईयों को भरेंगें और जिस दिन इनकों उद्योग धन्धों की शिक्षा देकर इनकी आय को ऊँचा उठा देगें उस दिन हमारा भ्रातृत्वभाव व्यक्त होगा। ग्रामों में जहां समय अचल खड़ा है जहां माता और पिता अपने बच्चों के भविष्य को बनाने में असमर्थ है। वहां जब तक हम आशा और पुरुषार्थ का संदेश नहीं पहुंचा पायेगें तब तक हम राष्ट्र को जाग्रत नहीं कर सकेंगे। हमारी श्रद्धा का केन्द्र आराध्य हमारे पराक्रम और प्रयत्न का उपकरण तथा उपलब्धियों का मानदण्ड वह मानव होगा जो शब्दशः अनिकेत और अपरिग्रही है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी अपने आदर्शों को मूर्तरूप देने के लिए सतत् प्रयासरत रहे। मा० भाउसाहब देवरस की प्रेरणा से अपने आदर्शों के प्रचारार्थ सन् 1947 राष्ट्रधर्म प्रकाशन की नींव डाली, जिससे भविष्य में आने वाली काली आंधी से पूरे देश को सजग किया जा सके। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जनसंघ के राष्ट्रजीवन दर्शन के प्रणेता व निर्माणकर्ता व्यक्ति थे। उनका उददेश्य स्वतन्त्रता की पुर्नरचना के प्रयासों के लिए विशुद्ध भारतीय तत्व दृष्टि प्रदान करना था। उन्होनें भारत की सनातन विचार धारा को युगानुकूल रूप में प्रस्तुत करते हुए एकात्म मानववाद का दर्शन प्रस्तुत किया। पंडित जी को जनसंघ की आर्थिक नीतियों का निर्माता माना जाता है।

पंडित जी के विचार में आर्थिक विकास का मुख्य उद्देश्य सामान्य मानव को सुखी बनाना है। संस्कृतिनिष्ठा उपाध्याय के द्वारा निर्मित राजनैतिक जीवनदर्शन का पहला सूत्र है उनके शब्दों में- "भारत में रहने वाला और इसके प्रति ममत्व की भावना रखने वाला मानव समूह एक जन है उनकी जीवन प्रणाली कला साहित्य दर्शन सब भारतीय संस्कृति है।" इसलिए भारतीय राष्ट्रवाद का आधार यह संस्कृति है, इस संस्कृति में निष्ठा रहे तभी भारत एकात्म रहेगा।

"वसुधैव कुटम्बकम" भारतीय सभ्यता से प्रचलित व अनुप्राणित है। बसुधैव कुटुम्बकम की भावना के कारण ही भारत में सभी धर्मों को समान रूप से फलने फूलने का अधिकार व अवसर मिला। संस्कृति से किसी व्यक्ति, वर्ग, राष्ट्र आदि की वे बातें जो उसके मन, रूचि, आचार, विचार, कला-कौशल और सभ्यता की सूचक होती है पर विचार होता है अर्थात् संस्कृति किसी भी राष्ट्र के व्यक्तियों के जीवन जीने की शैली है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी पत्रकार होने के साथ-साथ चिन्तक और लेखक भी थे वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे उनके लेखन का क्षेत्र सामाजिक चिन्तन, आर्थिक चिन्तन, राजनैतिक चिन्तन व शैक्षिक चिन्तन प्रमुख था।

पंडित जी के द्वारा रचित प्रमुख पुस्तकें है।

- दो योजनाएँ
- राजनीतिक डायरी
- भारतीय अर्थनीति का अवमूल्यन
- सम्राट चन्द्रगुप्त
- जगदगुरू शंकराचार्य
- एकात्म मानववाद
- राष्ट्र जीवन की दिशा
- एक प्रेमकथा

पंडित जी के शैक्षिक व्यक्तित्त्व की झलक उनके द्वारा रचित विभिन्न पुस्तकों एवं लेखों के अध्यनोंपरान्त हम कह सकते है कि भारतीय शिक्षा प्रणाली को देने के लिए उनके पास बहुत कुछ था। पंडित जी औपचारिक शिक्षा (शालेय शिक्षा) के साथ-साथ अनौपचारिक (समाज के द्वारा) शिक्षा को भी उतना ही महत्वपूर्ण मानते थे क्योंकि सामाजिक शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति में संस्कारों व मूल्यों का बीजारोपण आसानी से किया जा सकता है। पंडित जी मजहबी आधार पर शिक्षा के स्वरूप के निर्माण के विरोधी थे विशेषतः ईसाई मिशनरियों द्वारा चलाई जाने वाली संस्थाओं को देश के लिए उन्होनें खतरनाक बताया।

पंडित जी शिक्षा को देश की उन्नति का सर्वोत्तम उपकरण मानते थे, इसलिए वह शिक्षा को औपचारिक व अनौपचारिक दोनों माध्यमों से देने के पक्षधर थे। सामाजिक व व्यक्तिगत शिक्षा, संस्कृति व मूल्यगत नैतिक शिक्षा, नवनिर्माण की शिक्षा, भौतिकवाद का अध्यात्मिकता से जुड़ाव की शिक्षा से युक्त समाज के निमार्ण के स्वप्नदृष्टा थे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी विज्ञान और संस्कृति के समन्वित स्वरूप को ही समाज के पुननिर्माण का आवश्यक तत्व मानते है और आगाह करते है हम सम्पूर्ण मानव के ज्ञान और उपलब्धियों का संकलित विचार करें।"

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की मृत्यु 11 फरवरी 1968 को मुगलसराय के आस-पास रेल में किसी अज्ञात के द्वारा कर दी गयी और इसी के साथ भारत के स्वर्णिम आकाश में चमकता हुआ एक नक्षत्र हमेशा के लिए बुझ गया।

पंडित जी की उच्च शैक्षिक सोच जिसके द्वारा वे सजग राष्ट्र की कल्पना करते थे जिसमें अमीर व गरीब सभी को विकास के समान अवसर प्राप्त होंगे व सभी के लिए शिक्षा के दरवाजे खुले होंगे। भौतिकवादी व आध्यात्मिकतावादी सभी प्रकार की शिक्षा का

समन्वय होगा और इस प्रकार की शिक्षा हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति की जड़ों से जुड़ी रहकर मूल्योन्मुख व भौतिक शिक्षा प्रदान करेगी जिससे देश का विकास होगा। अर्थात् हम कह सकते हैं कि पंडित जी एक ऐसे शिक्षा मनीषी थे जो आध्यात्मिक शिक्षा के साथ ही विज्ञान की शिक्षा के भी समर्थक थे।

निष्कर्ष

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी अदभुत प्रतिभा के धनी थे जो की बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। उन्होंने अपने शैक्षिक काल में ही अपनी कुशाग्र बुद्धि का परिचय देते हुए 'जीरो क्लब' जैसे शैक्षिक संगठन की नींव रखी। पंडित जी औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ अनौपचारिक शिक्षा को भी बहुत ही महत्वपूर्ण मानते थे। वह समाज के अंतिम पायदान पर बैठे व्यक्ति की भी उन्नति चाहते थे अर्थात वह एक एकात्म मानववाद के पोषक थे।

सारांश रूप में हम कह सकते हैं पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यक्तिगत व सामाजिक शिक्षा, भौतिक व आध्यात्मिक शिक्षा, भौतिक व वैज्ञानिक शिक्षा एवं आडम्बरविहीन शिक्षा के समन्वित दृष्टिकोण के पोषक थे। अर्थात हम कह सकते हैं पंडित जी अद्भुत व्यक्तित्व के धनी थे। उनके व्यक्तित्व का प्रभाव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर था।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

शर्मा, डॉ० महेशचन्द्र. (एन.डी.) पं० दीनदयाल उपाध्याय कर्तव्य एवं विचार, वसुधा पब्लिकेशन्स प्रा०लि० 811 माचल 19 बाराखम्भा मार्ग, नई दिल्ली-110001

भिषीकर, चन्द्रशेखर परमानन्द. (एन.डी.) पं० दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन, खण्ड-5 राष्ट्र की अवधारण अनुवादक मोटेश्वर तपस्वी, सुरुचि प्रकाशन झण्डेवाला नई दिल्ली।

गोयनका, कमल किशोर (संपादक). (एन.डी.) पं० दीनदयाल उपाध्याय व्यक्ति दर्शन, दीनदयाल शोध संस्थान रानी झाँसी मार्ग नई दिल्ली-55

उपाध्याय, दीनदयाल. (एन.डी.) एकात्म मानव दर्शन, सुरूचि प्रकाशन केशव कुन्ज नई दिल्ली-110055

शर्मा, आचार्य श्री राम. (एन.डी.) नैतिक शिक्षा, युग निर्माण योजना मथुरा। अवस्थी, ब्रहमदत्त, "राष्ट्रवाद" लोकहित प्रकाशन लखनऊ-4

ठेंगडी, दन्तोपन्त (एन.डी.) एकात्म मानववाद-एक अध्ययन, लोकहित प्रकाशन राजेन्द्र नगर, लखनऊ- 226004

उपाध्याय, पं० दीनदयाल. (एन.डी.) अपना देश अपनी परिस्थितियाँ एकात्म मानववाद "एकात्म मानव दर्शन", सुरूचि प्रकाशन केशव कुन्ज नई दिल्ली-110055

तिवारी, डॉ० बाबूलाल (1996-97) वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय परिवेश में पं० दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी, अप्रकाशित।